

---

# Sandipanikritam Shri Krishna Stotram

---

## सान्दीपनिकृतं श्रीकृष्णस्तोत्रम्

---

### Document Information



---

Text title : Sandipanikritam Shri Krishna Stotram

File name : sAndIpanikRRitaMshrIkRRiShNastotram.itx

Category : vishhnu, vishnu, krishna, brahmavaivartapurANa, stotra

Location : doc\_vishhnu

Proofread by : PSA Easwaran

Description/comments : brahmavaivartapurANa | shrIkRRiShNajanma, uttarabhAga | adhyAya  
102/6-15||

Latest update : March 29, 2025

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

March 29, 2025

*sanskritdocuments.org*

---

## सान्दीपनिकृतं श्रीकृष्णस्तोत्रम्



सान्दीपनिरुवाच ।  
परं ब्रह्म परं धाम परमीश परात्पर ।  
स्वेच्छामयं स्वयञ्ज्योतिर्निलिप्तैको निरङ्कुशः ॥ ६ ॥  
भक्तैकनाथ भक्तेष्ट भक्तानुग्रहविग्रह ।  
भक्तवाञ्छाकल्पतरो भक्तानां प्राणवल्लभ ॥ ७ ॥  
मायया बालरूपोऽसि ब्रह्मेशशेषवन्दितः ।  
मायया भुवि भूपाल भुवो भारक्षयाय च ॥ ८ ॥  
योगिनो यं विदन्त्येवं ब्रह्मज्योतिः सनातनम् ।  
ध्यायन्ते भक्तनिवहा ज्योतिरभ्यन्तरे मुदा ॥ ९ ॥  
द्विभुजं मुरलीहस्तं सुन्दरं श्यामरूपकम् ।  
चन्दनोक्षितसर्वाङ्गं सस्मितं भक्तवत्सलम् ॥ १० ॥  
पीताम्बरधरं देवं वनमालाविभूषितम् ।  
लीलापाङ्गतरङ्गैश्च निन्दितानङ्गमूर्च्छितम् ॥ ११ ॥  
अलक्तभवनं तद्वत्पादपद्मं सुशोभनम् ।  
कौस्तुभोद्भासिताङ्गं च दिव्यमूर्तिं मनोहरम् ॥ १२ ॥  
ईषद्धास्यप्रसन्नं च सुवेषं प्रस्तुतं सुरैः ।  
देवदेवं जगन्नाथं त्रैलोक्यमोहनं परम् ॥ १३ ॥  
कोटिकन्दर्पलीलाभं कमनीयमनीश्वरम् ।  
अमूल्यरत्ननिर्माणभूषणौघेन भूषितम् ॥ १४ ॥  
वरं वरण्यं वरदं वरदानामभीप्सितम् ।  
चतुर्णामपि वेदानां कारणानां च कारणम् ॥ १५ ॥  
पाठार्थं मत्प्रियस्थानमागतोऽसि च मायया ।

पाठं ते लोकशिक्षार्थं रमणं गमनं रणम् ।  
स्वात्मारामस्य च विभोः परिपूर्णतमस्य च ॥ १६ ॥  
इति श्रीब्रह्मवैवर्तपुराणे श्रीकृष्णजन्मखण्डे उत्तरे  
अधिकशाततमाध्यायान्तर्गतं सान्दीपनिकृतं  
श्रीकृष्णस्तोत्रं समाप्तम् ।  
ब्रह्मवैवर्तपुराण । श्रीकृष्णजन्म, उत्तरभाग । अध्याय १०२/६-१५ ॥

brahmavaivartapurANa . shrIkRRiShNajanma, uttarabhAga . adhyAya 102/6-15..

Proofread by PSA Easwaran

---

——  
*Sandipanikritam Shri Krishna Stotram*  
pdf was typeset on March 29, 2025  
——

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

